वृद्धावस्थाः एक विवेचन

डा0 स्वामी प्रसाद
सहायक अध्यापक,
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय
हमीरपुर, उत्तरप्रदेश, भारत

सारांश

प्रकृति पर शासन करना सम्पता का मूल है, अगर हम सम्पता के इतिहास पर नजर डालें तो ज्ञात होगा कि यह प्रकृति के विभिन्न पहलुओं की छानबीन व अनुसंधान पर आधारित है कि उसकी विपुल सम्पदा को मानव कल्याण के लिये प्रयोग किया जा सके, इससे यह भी पता चलता रहता है कि मानव व प्रकृति के बीच एक प्रकार का द्वन्द चलता रहता है जिसमें हर एक दूसरे पर नियन्त्रण कर अपनी श्रेष्ठता सिद्ध करना चाहता है। मानव ने अपने यत्नों द्वारा बहुमूल्य विम्ब को परिलक्षित कर सफलता प्राप्त की है जो वर्तमान की प्रशीतन शैली में देखा जा सकता है लेकिन यह अधिक समय तक के लिये सम्भव नहीं है फिर भी विज्ञान ने यह प्रमाणित कर दिया है कि बाहर फेंक दी जाने वाली वस्तु या तिरष्कृत व्यक्ति का भी अपना मूल्य होता है। यदि समुचित एवं प्रभावी ढ़ंग से उसके साथ बर्ताव किया जाये।

धार्मिक ग्रन्थों के साहित्य में वृद्धावस्था को अच्छे एवं बुरे दोनों ही रूपों में प्रस्तुत किया गया है। याज्ञवल्क्य स्मृति में वृद्धावस्था को श्रेष्ठ परिपक्वता कहा गया है। चरक संहिता में वृद्धावस्था को अधिक उपयोगी और उत्पादक बनाने के लिये सुझाव दिया गया है। नाटककार भाषा ने तो यहाँ तक कह दिया है कि वृद्धावस्था को जीवन का अन्तिम चरण बनाकर प्रकृति ने भूल की है वह तो जीवनकाल के मध्य में होना चाहिये। विलियम शेक्सपियर दुनिया को एक रंगमंच मानते हैं और मनुष्य को एक खिलाड़ी।

वृद्धावस्था को उन्हें छठी एवं सातवीं स्थिति मानते हैं।

अरस्तू ने वृद्धावस्था को वीभत्स और नैराश्यपूर्ण कहा है तथा वृद्धों को अविलम्ब शासन से अलग करने की अनुशंसा की है । वृद्धावस्था को लेकर प्लेटो के सकारात्मक व भावुकतापूर्ण विचार थे: - हमारे लिए पिता या पितामह, दादा या दादी से अधिक पूज्यनीय पात्र नहीं है जिनके प्रति हम सदियों से नतमस्तक होते आये हैं।

युग तेजी से करवट बदल रहा है परिणामतः जीवन मूल्यों में निरन्तर गिरावट आती जा रही है। भौतिक उन्नति वरदान से अधिक अभिशाप सिद्ध हो रही है। भारतीय संस्कृति के मूल आधार संयुक्त परिवार आज टूटते जा रहे हैं। जहाँ पर भी संयुक्त परिवार विद्यमान हैं वहाँ का वातावरण वृद्धों की मानसिकता एवं शारीरिक स्थिति के अनुकूल नहीं है। धनोपार्जन की तलाश और शहरी जीवन के मोह में आज की युवा पीढ़ी प्रायः नगरों की ओर आकर्षित हो रही है, फलस्वरूप वृद्धों के प्रति उदासीनता बढ़ रही है । उपेक्षापूर्ण दृष्टिकोण ने वृद्धों एवं असमर्थों के लिये गहन समस्या उत्पन्न कर दी है।

चिकित्सा पद्धति में उन्नति के साथ-साथ औसत आयु के स्तर में वृद्धि हुई है, परिणामतः वृद्धों की संख्या में वृद्धि हो रही है। भारतीय संस्कृति में वृद्ध माता-पिता एवं परिवार में सभी वृद्धजनों को भगवान का पद दिया जाता है किन्तु आज के प्रगतिशील युग में हर क्षण बदलते सामाजिक परिवेश में नई पीढ़ी से ऐसी आशा करना दुराशा मात्र है। नई पीढ़ी अपने पैरों पर खड़े होते ही वृद्धजनों को अनुपयोगी और भारस्वरूप समझने लगती है। छोटी उम्र से ही उनके अनुशासन में रहना उन्हें अच्छा नहीं लगता। जिन वृद्ध माता-पिता के हाथों में आर्थिक संसाधन केन्द्रित है वहाँ निहित स्वार्थों के कारण वातावरण कुछ भिन्न है। इसके विपरीत जो माता-पिता सन्तान पर आश्रित हैं उनके प्रति श्रद्धा व सत्कार तो दूर की बात है प्रायः कर्तव्य की

भावना भी दृष्टिगोचर नहीं होती है।

उम्र बढ़ोत्तरी एक प्राकृतिक एवं अनुलोम (पीछे न जाने वाली) जीवन पद्धति है।1. इस तथ्य की वास्तविकता अक्सर भ्रामक होती है। बहुत से वृद्ध, जो वृद्धावस्था की ओर बढ़ रहे हैं ऐसा दृष्टिकोण अपनाने को प्रेरित होते हैं, जो उम्र बढ़ोत्तरी या वृद्धावस्था के क्रम को गतिशीलता प्रदान कर कर सकता है और बुजुर्ग या वृद्धों को हाशिए में डाल सकता है।

वृद्धावस्था प्रायः थकान, कार्यशीलता में कमी, रोग प्रतिरोधक क्षमता के ह्रास से सम्बन्धित है।[2]. अक्षमताएँ जो दैनिक जीवन के काय-कलापांे को दुर्बल बनाती हैं वृद्धावस्था में सामान्य हो जाती हैं। इनके चिन्ह रोग नहीं माने जाते हैं फिर भी ये संयुक्त रूप से वृद्धावस्था निर्मित करते हैं।

यद्यपि वृद्धावस्था विभिन्न आयामों वाली पद्धति है[3]. वस्तुतः इसके कारण एवं परिणाम समझने के उद्देश्य से इस पर पड़ने वाले जैविक, सामाजिक मनोवैज्ञानिक एवं जननांकिकीय कारकों की चर्चा की जा सकती है।

जनांकिकीय अर्थ में उम्र बढ़ोत्तरी एक जैविक पद्धति है जो गतिमान एवं निरन्तरता लिये होती है। काल-क्रमिक उम्र जैविक और मनोवैज्ञानिक उम्र की नाप नहीं करती है।4. वृद्धावस्था कब प्रारम्भ होती है इस उम्र को निश्चित नहीं किया जा सकता है। प्रशासनिक उद्देश्यांे जैसे सेवानिवृत्ति का निश्चयकरण, पेंशन योग्य उम्र का निर्धारण तो होता है किन्तु इसका सम्बन्ध जैविक एवं मनोवैज्ञानिक उम्र से नहीं होता है। एक देश के श्रम बल वाली अधिक अवस्था की जनसंख्या का बड़ा हिस्सा एक आर्थिक बोझ का प्रतिनिधित्व करता है। इसके अतिरिक्त व्यक्तिगत सेवायें उपलब्ध कराने में यह बड़ी आवश्यकतायें उत्पन्न करता है, विशेषकर चिकित्सकीय व सामाजिक क्षेत्र में उन लोगों के लिये जो वृद्धावस्था अथवा उम्र बढ़ोत्तरी के

कारण अक्षमताओं की दशाओं के कारण दुर्बल हो गये हैं।

वृद्धावस्था को समझने में दो तथ्य महत्वपूर्ण होते हैं जो परस्पर भिन्न होते हुए भी पारस्परिक रूप से सम्बन्धित होते हैं। वे हैं-

1- शारीरिक उम्र

2- सामाजिक उम्र

शारीरिक उम्र एक व्यक्ति की जैविक दशाओं में परिवर्तन जैसे बालों के रंग में परिवर्तन, दाँत गिरना, दृष्टिदोष उत्पन्न होना, व्यक्तिगत आवश्यकताओं में ध्यानाकर्षण की स्थिति, शारीरिक व्याधियाँ या रोग आदि से सम्बन्धित है।

दूसरा तथ्य सामाजिक उम्र बढ़ोत्तरी जैसे सामाजिक सुरक्षा, किसी संगठित क्षेत्र में सेवा से निवृत्ति, जनंाकिकीय वर्गीकरण, समाज और व्यक्ति पर इसके प्रभाव आदि से सम्बन्धित प्रशासनिक आधार पर निश्चित की जाती है।

उपर्युक्त दो तथ्य वृद्धावस्था को समझने के महत्वपूर्ण आधार हैं, फिर भी इन तथ्यों के आधार पर वृद्धावस्था को परिभाषित करना कठिन है। "किसी ने एक बार कहा था कि मेरे लिए बूढ़ी उम्र मुझसे पन्द्रह वर्ष अधिक है, अर्थात जो मेरी उम्र से पन्द्रह वर्ष बड़ा है, वह बूढ़ा है।"5. यही कारण है कि 'ज्ममद.।हमष् युवक-युवतियाँ (13 से 19 वर्ष के मध्य) 30 वर्ष की उम्र वालांे को बूढ़ा या बूढ़ी समझते हैं, जो 45 वर्ष की उम्र के हैं वे 60 वर्ष की उम्र वाले को बूढ़ा समझते हैं। यहाँ तक की वृद्ध लोग व मुश्किल महसूस करते हैं कि वे बूढ़े या वृद्ध हैं। सामान्यतः वृद्धावस्था का विभाजन करने वाली रेखा सेवानिवृत्ति कि उम्र को माना जाता है, जो सेवानिवृत्त हो जाते हैं उन्हें वृद्धांे के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। उल्लेखनीय है कि सेवानिवृत्ति की उम्र स्थान-स्थान पर तथा सेवा के प्रकार के अनुसार अलग-अलग निर्धारित है।

संयुक्त राष्ट्र संघ उन्हें वृद्ध नागरिक के रूप में परिभाषित करता है

जो 65 वर्ष या उससे अधिक उम्र हैं क्योंकि इस उम्र के बाद शारीरिक अंगों की कार्य क्षमता में कमी आने लगती है अर्थात शारीरिक अक्षमता प्रकट होने लगती है।6

अधिकांश पश्चिमी राष्ट्रों ने 65 वर्ष की उम्र को सेवानिवृत्ति के लिए निर्धारित किया है। जहाँ तक भारत का प्रश्न है, सेवानिवृत्ति के लिए उम्र 55 वर्ष से 62 वर्ष के मध्य रखी गयी है।7. कहीं-कहीं पर 65 वर्ष (जैसे केन्द्रीय विष्वविद्यालयों में) या उससे भी अधिक रखी गयी है।

भारतीय जनगणना में 60 वर्ष या अधिक उम्र वाले व्यक्तियों को वृद्धों की श्रेणी में रखा गया है।8

प्रस्तुत शोध अध्ययन में 60 वर्ष से अधिक उम्र की महिलाओं को वृद्ध नागरिक मानते हुए अध्ययन के लिए चुना गया है। 60 वर्ष से अधिक उम्र के नागरिकों को पाँच आयु समूहांे में (60 से 65, 65 से 70, 70 से 75, 75 से 80, 80 से ऊपर) बाँटा गया है।

हम जानते हैं कि सेवानिवृत्ति की आयु व्यवसाय, व्यक्तिगत एवं सार्वजनिक संगठनांे, शासकीय संस्थाओं आदि में भिन्न-भिन्न होती है। सेवानिवृत्ति की आयु राजनीतिज्ञों पर लागू नहीं होती क्योंकि वे कभी भी सेवानिवृत्त नहीं होते। 80 वर्ष की आयु में भी वे पाँच वर्षीय शासनकाल के लिए मन्त्री पद के योग्य माने जाते हैं।9 किन्तु यह शर्त किसी अन्य संगठन के कर्मी पर लागू नहीं हो सकती है। इसके अतिरिक्त ऐसे भी व्यक्ति होते हैं जो सक्रियता की स्थिति में होने के बावजूद भी निष्क्रिय होते हैं। सम्भवतः इसी कारण से जब वे सेवानिवृत्त होते हैं तब वे दूसरों की अपेक्षा अधिक वृद्ध होते हैं।

ऐसी स्थिति से ऐसा प्रतीत होता है कि सेवानिवृत्ति व्यक्ति के वृद्ध होने की कसौटी होती है। यदि वह सेवानिवृत्त नहीं होता है तो इसके कई कारण हो सकते हैं। उनमें से एक विभागीय आलेखों में गलत उम्र दर्शाना है

जिससे वह सेवानिवृत्ति की आयु प्राप्त होने के पश्चात भी सेवारत रहता है।

इस तथ्य से स्पष्ट है कि वृद्ध या बुजुर्ग के लिए हमारी परिभाषा में विशिष्ट लक्षण की कमी होती है।

वृद्धावस्था की किसी भी विवेचना में यह ध्यान आवश्यक है कि शारीरिक और मानसिक दोनांे रूपों में उम्र वृद्धि की पृद्वति में विस्तृत व्यक्तिगत भिन्नतायें होती हैं। उम्र वृद्धि कई ढंगों से प्रभावित होती है जिनमें कुछ पूरी तरह से समझ में नहीं आती है। परिणामतः कुछ लोग 65 वर्ष की उम्र में भी औसतन 50 वर्ष की उम्र में ही अक्षम एवं मुरक्षाए हुए से प्रतीत होने लगते हैं।

वृद्धावस्था, सेवानिवृत्ति की आयु अथवा पेंशन की आयु की सामान्यतया पर्यायवाची मानी जाती है चूँकि सेवानिवृत्ति की आयु भी भिन्न-भिन्न होती है अतः यह स्वीकार करना तर्क पूर्ण होगा कि व्यक्ति 60 वर्ष के बाद वृद्ध हो जाता है।

जनसंख्यात्मक प्रवृत्ति

चिकित्सा विकास के कारण मृत्युदर की कमी औसत जीवन के लम्बा होने के परिणामस्वरूप वृद्ध व्यक्तियों की संख्या में वृद्धि हो रही है।

संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट के अनुसार वृद्ध व्यक्तियों का अनुपात विश्व जनसंख्या के प्रतिशत के अनुरूप ठोस रूप में बढ़ेगा। एक अध्ययन के अनुसार पूरे विश्व में 1950 के बाद व्यक्ति की औसत आयु में 20 वर्ष की वृद्धि हुई है। 1970 मंे 60 वर्ष से अधिक लोगों की संख्या 30 करोड़ 40 लाख से अधिक थी। उच्च प्रतिव्यक्ति आय के देशों में वर्ष 2000 तक 13 और इससे ऊपर होगा।

यह प्रतिशत सामान्य आय वर्ग वाले देशों में 10 होगा। जो वृद्ध व्यक्तियों के उच्च अनुपात वाले राष्ट्र के लिये गम्भीर समस्या होगी।

पिछले कुछ वर्षों मंें बहुत से राष्ट्र वृद्ध जनसंख्या की समस्या का

सामना कर चुके हैं, कमोबेश अभी भी ये राष्ट्र वृद्धों की सामाजिक, मनोवैज्ञानिक और आर्थिक समस्याओं से ग्रस्त है।

सामान्य जनसंख्या मंे वृद्ध व्यक्तियों का अनुपात तीव्र गति से बढ़ रहा है। चिकित्सा के चहुँमुखी विकास ने मृत्युदर को कम कर दिया है और जीवन लम्बा कर दिया है।

वृद्धावस्था का आशय

वृद्धावस्था की कोई निश्चित आयु निर्धारित नहीं कि गयी है लेकिन आमतौर पर 60 वर्ष और उसके बाद के व्यक्ति को बुजुर्ग या वृद्ध माना जाता है।10 बीसवीं सदी के उत्तरार्ध में मानव की औसत आयु में काफी वृद्धि हुई है जिसका प्रमुख कारण है-

चिकित्सा जगत में अनेकानेक नए आविष्कार, स्वास्थ्य के प्रति विशेष जागरूकता तथा विभिन्न राष्ट्रांे की सरकारों व विश्व स्वास्थ्य द्वारा किए गए अनेक प्रयत्न।

जहाँ तक वृद्ध की परिभाषित करने का प्रश्न है तो शब्दकोष के अनुसार- वृद्ध का शाब्दिक अर्थ होता है- वृद्धि से सम्पन्न, बुद्धि से युक्त, ठीक उसी प्रकार से जैसे शुद्ध का अर्थ होता है बुद्धि से सम्पन्न। यह बुद्धि आयु की कमी भी हो सकती है और विद्या, धर्म अथवा अनुभव की भी इसलिये जिस व्यक्ति में आयु विद्या धर्म अथवा अनुभव की वृद्धि हो वही वृद्ध है।11

वृद्धता का लक्षण मात्र आयु का ही अधिक हो जाना नहीं, बल्कि एक पूर्ण वृद्ध के परिवेश में आयु वृद्ध और अनुभव वृद्ध, इन तीनों का ही संयोग होता है।

आनादिकाल से अपनी विजय यात्रा पर निकला हुआ मानव ज्ञान, विज्ञान, धर्म, दर्शन, शिक्षा, संस्कृति और भाषा के जिन नए ध्रुवों पर अपना झण्डा फहराया आया है, समाज व्यवस्था राजनीति और अर्थ व्यवस्था से सम्बन्धित जिन वैज्ञानिक नियामों का आविष्कार करता आया है उन सबको

आगामी पीढ़ी तक सम्प्रेषण का कार्य मौलिक और लिखित दोनांे ही रूपों में समाज के वृद्ध लोग ही करते रहे हैं। लाखों करोड़ों वर्षो से संचित ज्ञान और अनुभव को भी सहजता से वह अपने माता-पिता बड़े बुजुर्गों एवं गुरूजनों से प्राप्त कर लेता है।

युग के हर व्यक्ति को अपना-अपना प्रयोग और अपना-अपना आविष्कार नए सिरे से करना पड़ता तो हम आज भी जंगलों और पर्वतों की गुफओं रहकर वन्य जीवन बिताने को बाध्य होते। आज शक्ति और सामथ्र्य के जिस उच्च शिखर पर आरूढ़ होकर हम गर्व अनुभव करते हैं उस ऊँचाई तक हमें पहुँचाने का श्रेय हमारे वृद्ध को ही है।12

साहित्य का पुनरावलोकन

वृद्धावस्था में महिलाआंे की स्थिति और भी दयनीय हो जाती है क्योंकि भारतीय समाज में पुरूष प्रधानता के चलते महिलाओं की परनिर्भरता प्रायः जीवन के प्रारंभ से लेकर अन्त तक बनी रहती है। यदि अपवादों को छोड़ दिया जाए तो वह प्रतिषत आज भी अधिक है जहॉ महिलाएं दूसरे पारिवारिक सदस्यों पर निर्भर हैं। वृद्धावस्था में तो यह स्थिति और भी गंभीर हो जाती है। वृद्ध महिलाओं का समाजशास्त्र अधिक प्राचीन नहीं है वरन् इस पर ध्यान तो उनके विधवा जीवन के शोध से प्रारम्भ हुआ है (स्वचंजं 1973)। जहाँ वृद्धावस्था व समाजशास्त्र आँकड़ों पर आधारित है वहीं महिला व समाजशास्त्र व्याख्यात्मक। वृद्धों का अध्ययन करते समय महिलाओं पर विशेष ध्यान केन्द्रित नहीं किया जाता या फिर उनमें महिलाआंे को उच्च प्राथमिकता नहीं दी जाती है। वृद्ध महिलाओं पर बहुत कम अध्ययन हुए हैं जो अध्ययन प्रकाश में आए हैं उनमें क्नसनकम 1987ए च्मदूपबा - ैनततूप 1981ए ळमम 1986 इत्यादि ने महिला व पुरूष के विभिन्न जीवन स्तरों में अन्तर को स्पष्ट किया है जिसके अनुसार वृद्ध महिलाओं को अपनी इस अवस्था में अत्यधिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है।

ब्वदमन 1984ए ज्ञपउइंसस 1987ए डबकंअपमस 1987 के अध्ययन में स्पष्ट किया गया है कि वृद्ध महिलाओं की स्थिति दोहरी विपत्ति का परिचायक है। ळंतददमत ने वृद्ध महिलाओं की गरीबी से सम्बन्धित अध्ययन किया। टंजना 1975 ने वृद्ध महिलाओं की बदलती भूमिका का अध्ययन किया। शर्मा और डॉक (1987) ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र की वृद्धि महिलाओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। ळवतम 1997 ने सामाजिक-आर्थिक एवं मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से वृद्धों का अध्ययन किया। अध्ययनों से स्पष्ट हुआ कि संयुक्त परिवार टूटने पर पुरूषों की अपेक्षा महिलाओं पर अधिक प्रभाव पड़ता है। पुरूषों को वृद्धावस्था में अपनी पत्नी के सहारे की

वृद्धजनों की जनसंख्या

कुल जनसंख्या में वृद्धजनों की जनसंख्या एक महत्वूपर्ण घटक है। यह ऐसा घटक है जिसकी अपनी निजी विशेषतायें और निजी समस्याएँ हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ ने 1983 में दुनिया के देशों के वृद्धजनों की समस्याओं की ओर सचेत करते हुए योजनायें बनाने का सुझाव दिया था, अब समस्या गम्भीर हो रही है तब संयुक्त राष्ट्र संघ ने वर्ष 1999 को वृद्ध वर्ष के रूप में मनाकर वृद्धजनों की जनसंख्या की ओर दुनिया के देशों का ध्यान पुनः आकृष्ट किया है।

विगत दशकों से स्वास्थ्य सुविधाओं में वृद्धि गम्भीर बीमारियों से बचने के लिये कारगर इलाज की खोज के फलस्वरूप मृत्यु दर में गिरावट आदि के कारण वृद्धजनों की जनसंख्या में दिनों-दिन वृद्धि हो रही है। विश्व स्तर पर 7.1 प्रतिशत वार्षिक की दर से जनसंख्या वृद्धि हो रही है जबकि 55 वर्ष से अधिक आयु वाले वृद्धजनों की जनसंख्या में 2.2 प्रतिशत की दर से वृद्धि हो रही है।13 भारत इसका अपवाद नहीं है 1947 के भारत की जनसंख्या में 17.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई है जबकि इस अवधि में 60 वर्ष से अधिक आयु वाले व्यक्तियों की जनसंख्या में 27.0 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 80 वर्ष से

अधिक आयु वाली जनसंख्या की वृद्धिदर और भी अधिक है।14

भारत ही नहीं लगभग सभी विकासशील देशों में वृद्धजनों की जनसंख्या बढ़ रही है। 1982 में रोजर्स ने भविष्यवाणी की थी कि आगामी कुछ ही दशकों में विकासशील देशांे में वृद्धजनों की जनसंख्या में अप्रत्याशित वृद्धि होगी तथा 2025 तक में संसार के 70 प्रतिशत वृद्ध इन्हीं देशों में पाए जायेंगे।

1901 में भारत में वृद्धजनों की कुल जनसंख्या 1 करोड़ 20 लाख थी जो 1991 में बढ़ कर 5 करोड़ 53 लाख हो गई। सन् 2001 में इस जनसंख्या के 7 करोड़ 59 लाख हो जाने की उम्मीद थी। संयुक्त राष्ट्र संघ के अध्ययनों के अनुसार भारत में सन् 2030 में वृद्धजनों की कुल जनसंख्या 19 करोड़ 60 लाख हो जायेगी।15 स्वतन्त्रता के बाद वृद्धजनों की जनसंख्या का प्रतिशत निम्नवत रहा है।

कुल जनसंख्या में वृद्धजनों का प्रतिशत

कुल जनसंख्या में वृद्धजनों का प्रतिशत							
वर्ष		**पुरूष**			**महिला**		
	आयुस मूह	**60+**	**65+**	**70+**	**60+**	**65+**	**70+**
1950		5.2	2.9	1.7	6.1	3.8	2.8
1960		5.5	3.3	1.7	5.8	3.5	1.9
1970		5.9	3.6	1.9	6.0	3.7	2.0

1980		6.4	4.0	2.2	6.6	4.1	2.3
1990		7.1	4.5	2.5	2.5	7.6	2.8
2000		8.0	3.5	3.0	8.9	5.9	3.4
2010		9.2	4.3	3.6	9.2	6.7	4.3
2015		9.5	4.5	3.7	9.0	6.0	4.4

स्रोत- डेमोग्राफी इण्डिया, अंक 23

वृद्धजनांे की जनसंख्या में वृद्धि के कारण

वृद्धजनों की जनसंख्या में वृद्धि के निम्न कारण हैं-

मृत्यु दर में कमी

विगत दशकों में मृत्युदर मंे देशव्यापी गिरावट आई है फलस्वरूप वृद्धजनों की जनसंख्या में वृद्धि हुई है। भारत में 1901-11 में सकल मृत्युदर 44.4 प्रति हजार थी जो 1951-60 में घट कर 22.8, 1961-70 में 19.2, 1971-80 में 15.0, 1981-90 में 15.0, 1981-90 में 11.9 तथा 1991-94 में 9.7 रह गई है। वृद्ध पुरूषों की जनसंख्या की मृत्युदर में भी कमी आई है। 1941-51 में यह 98.7 थी जो 1961-71 में घटकर 73.7 और 1984 में 67 रह गई है। इन वर्षों में वृद्ध महिलाओं की मृत्युदर क्रमशः 88.3, 72.5 और 58.0 रही है।[16]

वृद्ध महिलाओं की मृत्युदर वृद्ध पुरूषों की तुलना में सदैव कम रही है कारण महिलाओं और पुरूषों की जीवन शैली में भिन्नता है। पुरूषों में धूम्रपान व तम्बाकू खाने की खतरनाक आदत, मेहनतकश कार्यों में संलग्न

रहना, स्वास्थ्य के लिये हानिकारक क्रिया-कलापों में रूचि लेना हृदय रोग व कैंसर जैसी बीमारियों से पीड़ित होना आदि के कारण महिलाओं की तुलना में मृत्युदर अधिक पाई जाती है।

जीवन की प्रत्याशा में वृद्धि

मृत्युदर में कमी के कारण जीवन की प्रत्याशा में वृद्धि हुई है। 1973 में एक सामान्य व्यक्ति के जीवन की प्रत्याशा 49.7 वर्ष में बढ़कर 52.1 वर्ष 1983 में 55.3 वर्ष 1988 में 57.8 वर्ष और इस समय 60 वर्ष के ऊपर है सामान्य व्यक्तियों की तरह वृद्ध व्यक्तियों की जीने की प्रत्याशा में वृद्धि हुई है। 1901-11 में 60 वर्ष से पुरूष की जीने की प्रत्याशा नौ वर्ष थी जो 1981-91 में 17.3 वर्ष हो गई है। इसी प्रकार 1901-11 में 60 वर्ष से पुरूष की वृद्ध महिला के जीने की प्रत्याशा 9.3 वर्ष थी जो 1981-91 मंे बढ़कर 18 वर्ष हो गई है। 1991-2001 में वृद्ध पुरूष और वृद्ध महिला के जीने की प्रत्याशा क्रमशः 18.3 व 20.0 वर्ष होने का अनुमान है। कहने का तात्पर्य यह है कि अगली सदी में एक सदी में एक वृद्ध पुरूष के 18 वर्ष और एक वृद्ध महिला के 20 वर्ष जीने की उम्मीद है।

पुरूष और महिलाओं के जीवन की प्रत्याशा

पुरूष और महिलाओं के जीवन की प्रत्याशा (वर्षों में)						
वर्ष	**पुरूष**	**महिला**	**पुरूष**	**महिला**	**पुरूष**	**महिला**
1901-11	9.0	9.3	7.3	7.3	5.8	6.0
1911-21	9.0	9.5	7.3	7.7	5.8	6.2
1921-31	9.3	9.9	7.5	8.0	6.0	6.4

1931-41	10.0	10.6	8.0	8.6	6.3	6.8
1941-51	10.9	11.4	8.8	9.2	6.8	7.3
2051-61	12.3	12.8	9.8	10.3	7.6	8.0
2061-71	14.0	14.3	11.1	11.5	8.6	8.9
1971-81	16.1	16.1	12.8	13.0	9.7	9.9
1981-91	17.3	18.0	13.7	14.5	10.4	11.0
1991-2001	18.3	20.0	14.6	15.9	11.1	12.0

स्रोत. डेमोग्राफी इण्डिया, अंक 23

नगरीय क्षेत्रों में बेहतर स्वास्थ्य सुविधाओं और सामान्य स्वास्थ्य रक्षा के प्रति जागरूकता के कारण ग्रामीण क्षेत्रों की अपेक्षा वृद्ध व्यक्तियांे के जीने की प्रत्याशा अधिक पाई जाती है।

नगरीय व ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की प्रत्याशा

नगरीय व ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की प्रत्याशा (वर्षों में)				
वर्ष	**ग्रामीण क्षेत्र**		**नगरीय क्षेत्र**	
	60+	70+	60+	70+
1970-75	13.5	8.6	15.7	10.8
1976-80	14.7	10.2	16.2	11.0

1981-85	15.1	9.9	16.9	11.6
1986-89	16.1	11.1	16.8	11.4
1991-95	16.9	12.2	17.3	11.8
1996-2000	17.4	12.9	17.9	12.4
2001-2005	17.9	13.1	18.1	12.9
2006-2010	18.5	13.8	18.9	13.4
2011-2015	18.8	143	19.9	14.4

वृद्धजनांे की समस्याएँ

शारीरिक समस्या

वृद्धावस्था आते ही शरीर की इन्द्रियाँ शिथिल होने लगती हैं। शरीर के तन्तु सिकुड़ने लगते हैं। रक्तचाप बाधित होने लगता है शरीर कमजोर हो जाने से चलने-फिरने में असमर्थता आने लगती है। वृद्धजनों की यह बहुत बड़ी समस्या है। एक अध्ययन के अनुसार 70 वर्ष की आयु के वृद्ध व्यक्ति के मस्तिष्क में रक्त की आपूर्ति 30 वर्ष वाले व्यक्ति की तुलना में 15 प्रतिशत कम होती है। वृद्धजनों की एक बहुत बड़ी समस्या है- आँखों से कम दिखाई पड़ना। वृद्ध महिलायें इस समस्या से वृद्ध पुरूषों की तुलना में कहीं अधिक पीड़ित हैं। पूर्व के जीवन में महिलाओं की उपेक्षा, पौष्टिक खाद्य पदार्थों का कम या न मिलना ही इसके प्रमुख हैं। इस आयु में श्रवण इन्द्रिया कमजोर पड़ जाती हैं तब इन्हें असहाय होकर संकेतों से काम लेना पड़ता है।

आर्थिक समस्या

आर्थिक समस्या आय से जुड़ी है चूँकि इस अवस्था में कार्य करने की क्षमता कम पड़ जाती है अतः दैनिक आवश्यकताओं के लिये दूसरों पर निर्भर रहना पड़ता है उन वृद्धों की दशा अधिक दयनीय होती है जो या तो निःसन्तान होते हैं या अविवाहित होते हैं। जमीन-जायदाद के स्वतन्त्र मालिक होते हुये भी शारीरिक दुर्बलता के साथ ये वृद्ध भी बड़ी त्रासद स्थिति का सामना करते हैं। राजस्थान के चार जिलों के 500 वृद्धजनों के अध्ययन में पाया गया है कि 60 प्रतिशत वृद्धजनांे व 30 प्रतिशत वृद्ध महिलाओं के पास आय का अपना कोई स्त्रोत नहीं है। महिलाओं में दो-तिहाई विधवाओं के पास और पुरूषों में 45 प्रतिशत विधुरों के पास आय का कोई स्त्रोत नहीं है।

स्वास्थ्य की समस्या

वृद्धजनों के सामने स्वास्थ्य का कमजोर होना भी बहुत बड़ी समस्या है। वृद्धजनों को नाना प्रकार की बीमारियाँ घेरे रहती हैं तथा समय से उनका इलाज भी नहीं होता। कर्नाटक राज्य वृद्धों से सम्बन्धित अध्ययन में पाया गया कि 20 प्रतिशत वृद्धजन लम्बे समय से किसी न किसी बीमारी से पीड़ित हैं। प्रमुख बीमारियाँ- अस्थमा, रक्तचाप, तपेदिक, हड्डी का दर्द, दृष्टिदोष और फालिस हैं। बीमारों में 44 प्रतिशत गत पाँच वर्षों से किसी न किसी बीमारी से पीड़ित पाये गये हैं।

सामाजिक समस्या

पहले संयुक्त परिवार अधिक होते थे जिनका मुखिया परिवार का सबसे अधिक सयाना व्यक्ति होता था। सयाने की ही हुकूमत चलती थी। वह परिवार के हर सदस्य की सुख-सुविधा का ध्यान रखता था। परिवार के सदस्य भी सयाने की सुख-सुविधा का ध्यान रखते थे। सयानों को कम से कम कठिनाइयों से गुजरना पड़ता था। आज संयुक्त परिवार टूट रहे हैं।

सयानों की अहमियत कम होती जा रही है। आज की युवा पीढ़ी में परिवार की परिधि में मात्र पति-पत्नी और बच्चों को को सम्मिलित करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। वृद्धजन परिवार से अलग-थलग होते जा रहे हैं। ऐसी स्थिति में वृद्धजनों के सामने सहारे की समस्या आना स्वाभाविक ही है अब वृद्धजनों को युवा पीढ़ी की संकीर्ण मानसिकता के कारण वह सम्मान नहीं मिलता जो पहले कभी मिलता था।

समस्याओं का निराकरण

अध्ययन बताते हैं कि भविष्य में वृद्धजनों की जनसंख्या में वृद्धि होनी है। इसे कोई रोक नहीं सकता। यदि उनकी समस्याओं के प्रति अभी से प्रयास न किये गये तो आगे समस्यायें जटिल से जटिलतर होती जायेंगी। अतः उनकी समस्याओं के निराकरण के लिये कारगर कदम उठाना आज के समय की माँग है।

आज हमारे सामने समाज व विकास का जो ढ़ाँचा खड़ा है उसे मूर्त रूप देने मंे वृद्धजनों का अमूल्य योगदान रहा है अतः उनके प्रति कृतज्ञता के रूप में उनकी समस्याओं का निराकरण खोजना सरकार, समाज व परिवार की नैतिक जिम्मेदारी है। आज वृद्धजन भले ही शारीरिक अशक्तता के कारण अनुत्पादक सिद्ध हों और क्रियाशील व्यक्तियों के ऊपर एक बोझ के रूप में हो पर वे आज भी महत्वूपर्ण है। माना कि उनका शरीर थक चुका है पर उनका मस्तिष्क तो परिपक्व है। उनका मस्तिष्क नाना प्रकार के अनुभव संजोये हुए है। उनके अनुभव समाज को विशेषतौर से युवा पीढ़ी को एक रचनात्मक दिशा दे सकते हैं। वृद्धजनों की समस्याओं के निराकरण हेतु निम्न स्तर पर प्रयास विचारणीय हो सकते हैं।

शासन स्तर पर

आज की स्थिति में वृद्धजनों के ऊपर बहुत कम अध्ययन हुए हैं अतः उनकी मूलभूत समस्याओं की जानकारी कम है। वृद्धजनों की समस्यायें

उजागर करने के लिये शोध-अध्ययनों को सरकारी अनुदान पर प्रोत्साहित किया जाना चाहिये। अध्ययनों के निष्कर्ष

भावी योजनाओं के निर्माण में सहायक सिद्ध हो सकते हैं।

वृद्धजनांे को बुजुर्गों को सम्पदा मानते हुये उनके संरक्षण के उपाय किये जाने चाहिये। उन्हें निःशुल्क यातायात की सुविधा आदि दी जानी चाहिये। वर्तमान समय में गरीब वृद्धों को 1000 रू0 वृद्धावस्था पेंशन दी जाती है जो पर्याप्त नहीं है। पेंशन पुननिर्धारण किया जाना चाहिये तथा मंहगाई के अनुसार समय-समय पर पेंशन पुनर्रीक्षित की जानी चाहिये। पेंशन हर एक वृद्धजन को दी जानी चाहिये ताकि वे दूसरे पर पूरी तरह आश्रित न रहें साथ ही साथ परिवार में उनका महत्व भी बना रहे।

पेंशन का वितरण समय से हो और नियमित रूप से हो। इलाहाबाद जिले के होलागढ़ ब्लाक के एक गाँव के अध्ययन में पाया गया है कि 70 प्रतिशत वृद्ध लाभार्थी समय से पेंशन न मिलने के कारण परेशान हैं। पेंशन हेतु चयन, वितरण आदि के मामले की शिकायतें आज भी विचारणीय प्रश्न है।

समाज स्तर पर

हमारे वृद्धजन अपना शेष जीवन सुख पूर्वक बितायें, इसकी जिम्मेदारी समाज को भी अपने ऊपर लेनी होगी। ग्राम सभा स्तर पर एक समिति बने जिसमें हर वर्ग के वृद्धजनों को सदस्य बनाया जाना चाहिये। समिति यह देखे कि परिवार स्तर पर वृद्धजनों की क्या समस्याएं हैं फिर समस्याआंे के निराकरण के उपाय किए जाने चाहिये। समिति पेंशन के प्रकरण में भी वृद्धजनों की सहायता विचारणीय प्रश्न है।

परिवार स्तर पर

हर परिवार का परम् कर्तव्य है कि वह अपने वृद्धजनों की सुख-सुविधा का ध्यान रखें। परिवार के लिये वृद्धजन शरीर से अशक्त होते

हुये भी सहायक हो सकते हैं। दरवाजे पड़े रहकर वे घर की रखवाली करते हैं। वे परिवार के सदस्यों का, कौन सा कार्य कब करना है, इसका व्यावहारिक निर्देश देते रहते हैं। उनकी निगाह बच्चों पर भी रहती है यदि माता-पिता कहीं अन्यन्त्र व्यस्त हैं तो बच्चे वृद्धजनों के संरक्षण में रहते हैं और वे नियन्त्रित रहते हैं। वृद्धजन छोटे बच्चों को कहानियाँ सुनाते हैं जो नैतिकता व अच्छी सीख वाली होती है। पारिवारिक व सामाजिक विवादों के मामलों में उनकी सलाह बड़ी व्यावहारिक होती है।

वृद्धजनों की मेहनत से बनी व्यवस्था में हम सुखपूर्वक जी रहे हैं। अब हमारा कर्तव्य है कि हम उन्हें सुखपूर्वक जीवन जीनें दें। वृद्धजनों को सुख सुविधायें देना उनके प्रति दया दिखाना नहीं है। हमसे सुख सुविधायें पाना तो उनका अधिकार है। उनके इस अधिकार की रक्षा हर कीमत पर होनी चाहिये।

संदर्भ

1. *Muttagi, P.K., - Aging Issues And Old Age Care (1997) New Delhi, Page No. 2*
2. *Chowdhary, D. Paul, - Aging And the Aged (1992) New Delhi Page No.10*
3. *सिन्हा सुमनरानी, वृद्धजनों का समाजषास्त्रीय अध्ययन (1998) इलाहाबाद पृष्ठ सं0 -13*
4. *Muttagi, P.K., - Aging Issues And Old Age Care (1997) New Delhi, Page No. 5*
5. *समाज कल्याण (दिल्ली) मासिक पत्रिका, कल्याण मंत्रालय के लेख के उद्धृत, पृष्ठ सं0-17*
6. *संयुक्त राष्ट्र संघ की रिपोर्ट में प्रकाषित ।*

7. *Chowdhary, D. Paul, - Aging And the Aged (1992) New Delhi Page No.25*
8. *भारत 2010 सूचना मंत्रालय, नई दिल्ली ।*
9. *जैन, पुखराज, विष्व के प्रमुख संविधान (1996), आगरा पृष्ठ सं0-30*
10. *Shrivastav, R.S., Aged And the Society (1983), Delhi, Page No.56*
11. *समाज कल्याण, मासिक 1998 -पूर्वोक्त पृष्ठ सं0 - 13*
12. *शर्मा एवं डाक, एम.एल.ए.टी.एम., भारत में वृद्धावस्था (1987) दिल्ली ।*
13. *डेमोग्राफी इण्डिया, अंक 23, पृष्ठ सं0 - 108*
14. *जननांककीय शोध इकाई, भारतीय सांख्यकीय संस्थान, कलकत्ता (1995)।*
15. *U.N.O. Report (1998)*
16. *भारत 2000*